शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २६ : नई दिल्ली : ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९१, सर्व १४३, सानंद जसोल में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है। आगामी ५ नवम्बर को जसोल में भव्य दीक्षा समारोह आयोजित होगा। यह १०० दीक्षाओं के लक्ष्य की ओर बढ़ता हुआ प्रभावी चरण होगा। जैसी सूचनाएं और समाचार प्राप्त हो रहे हैं, कहा जा सकता है--इस कार्यक्रम में विराट उपस्थिति की संभावना है।

समझें पापों को-१०

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**रागो य दोसो वि य कम्मबीयं**। कर्म के दो बीज माने गए हैं--राग और द्वेष। पाप कर्म का जितना भी बंध होता है, उसके जिम्मेदार ये दो ही हैं और किसी भी कारण से पाप कर्म का बंध नहीं हो सकता। तात्त्विक भाषा में कहें तो आठ कर्मों में मूल एक मोहनीय कर्म ही ऐसा है, जो पाप कर्म के बन्धन के लिए जिम्मेदार है। अन्य किसी भी कर्म के द्वारा पाप कर्म का बन्ध नहीं हो सकता। अठारह पापों में दसवां पाप है--राग। राग एक ऐसी वृत्ति है, जिसे छोड़ना ज्यादा कठिन है। द्वेष को छोड़ना कुछ आसान है। परिवार के साथ राग हो जाता है, मित्रों के प्रति मोह राग हो जाता है और मुझे तो ऐसा लगता है, कहीं-कहीं साधु-साधु में भी कुछ राग हो जाता है। जैसे--एक सिंघाड़े में वर्षों तक साथ रहने का काम पड़ जाता है तो उस सिंघाड़े के अग्रणी के प्रति, सदस्यों के प्रति मोह भाव भी हो जाता है और कहीं शिष्य के प्रति गुरु के मन में राग हो जाता है।

आचार्य शय्यंभव श्रुतकेवली आचार्य थे। परन्तु एक शिष्य के प्रति मोह आ गया, जो उन्हीं का संसारपक्षीय पुत्र था। उसका नाम था मनक। वह अपने पिता की खोज में निकला तो योग से चंपानगरी में शय्यंभव से मिलना हो गया।

बालक ने पूछा--' ठीक आप जैसे ही मेरे पिताजी भी हैं। क्या आप उन्हें जानते हैं?'

शय्यंभव--'हां, मैं उन्हें जानता हूं।'

शय्यंभव की प्रेरणा से मनक के मन में वैराग्य भाव जागा और उसको दीक्षा प्रदान कर दी। आचार्य शय्यंभव ने अपने ज्ञान से जान लिया कि इसका आयुष्य बहुत छोटा है। थोड़े दिनों के जीवनकाल में यह ज्यादा स्वाध्याय नहीं कर सकेगा। इसलिए उन्होंने एक छोटा-सा आगम निर्यूढ़ किया--दसवेआलियं। आज साधु-साध्वियां उसका स्वाध्याय करते हैं, उसे कंठस्थ करते हैं। कुछ समय बाद बाल मुनि मनक का स्वर्गवास हो गया। आचार्य शय्यंभव की आंखें भी नम हो गईं। संतों ने इसका कारण पूछा तो आचार्य शय्यंभव ने कहा--'साधुओ! मनक के साथ मेरे दो संबंध थे। एक तो यह मेरा शिष्य था, दूसरा यह मेरा संसारपक्षीय बेटा भी था। दो-दो रिश्तों से जुड़ा हुआ व्यक्ति मेरी आंखों के सामने चला गया, इसलिए मन में कुछ कमजोरी आ गई।'

साधुओं को अब पता चला कि मनक उनका बेटा था। संतों ने कहा--'गुरुदेव! आप हमें पहले बता देते कि वह आपका बेटा है तो हम उसका विशेष ध्यान रखते।'

आचार्य शय्यंभव ने कहा--'साधुओ, तुम उसका ध्यान रखते, उससे परिचर्या नहीं करवाते तो उसके कर्म निर्जरा कैसे होती? इसीलिए मैंने इस रहस्य को उद्घाटित नहीं किया कि यह मेरा संसारपक्षीय बेटा है।'

मैं यह बताना चाहता हूं कि इतने बड़े आचार्य थे शय्यंभव, परन्तु उनके मन में भी एक शिष्य के प्रति, पुत्र के प्रति थोड़ा-सा मोह भाव आ गया। जब इतने बड़े आचार्य के मन में भी दिलगीरी आ सकती है तो गृहस्थ तो वैसे भी संसारी जीव है, उसके मन में भी मोह आए तो कोई बड़ी बात नहीं। परन्तु मोह को कम करने का, छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। शिष्य के मन में गुरु के प्रति और गुरु के मन में शिष्य के प्रति क्वचित् किंचित धर्म से जुड़ा हुआ राग भाव है तो हम उसे प्रशस्त कोटि का राग मान लें। परन्तु अप्रशस्त राग को तो छोड़ने का विशेष प्रयास करें। एक वस्तु के गुम हो जाने पर आदमी के मन में अगर पीड़ा हो रही है तो मानना चाहिए कि उसके मन में पदार्थ के प्रति मोह है।

गृहस्थ का जीवन काफी मोह का जीवन है, राग का जीवन है, ममता का जीवन है। आदमी का अपने परिवार के प्रति मोह हो सकता है, मकान के प्रति मोह हो सकता है, धन के प्रति, दुकान के प्रति मोह हो सकता है। गृहस्थी चलाना भी कोई आसान काम नहीं है। मैं तो कभी-कभी सोचता हूं कि एक दृष्टि से साधु का जीवन तो आसान है, किन्तु गार्हस्थ्य में रहना कुछ कठिन है। व्यापार करना, परिवार चलाना, टैक्स के मामलों का सलटाना आदि अनेक काम करने होते हैं। एक मोक्ष का मार्ग है, दूसरा मोह का मार्ग है। हम साधुओं की जो साधना पद्धति है, वह मोक्ष का मार्ग है और गृहस्थों का जो जीवन है, वह कुछ अंशों में या काफी अंशों में मोह का मार्ग है, संसार का मार्ग है। हां, इतना जरूर है कि गृहस्थ भी साधना कर सकते हैं। गार्हस्थ्य में रहकर भी काफी निर्लिप्त रह सकते हैं। कहा गया है--

जे समदृष्टि जीवड़ा, करै कुटुम्ब परिपाल।
अन्तर दिल न्यारा रवै, ज्यूं धाय रमावै बाल।।

जो सम्यक्दृष्टि श्रावक होते हैं, वे कुटुम्ब का परिपालन करते हैं तो इस सोच के साथ कि परिवार मेरा नहीं है। जैसे धाय माता बालक का लालन-पालन करते हुए भी यह जानती है कि पुत्र मेरा नहीं है। जैन वाङ्मय में कहा गया है--

एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दंसण-संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।

एक मेरी आत्मा शाश्वत है, जो ज्ञान, दर्शन से युक्त है। शेष जो बाह्य भाव हैं, वे तो संयोग लक्षण वाले हैं। जिसका संयोग होता है, उसका वियोग भी हो जाता है। श्रावक यह सोचे कि मैं परिवार का भरण-पोषण करता हूं, किन्तु अन्ततोगत्वा परिवार मेरा नहीं है। 'कुण बेटो कुण बाप, करणी आपो आप।' पिता हो या पुत्र, सबको अपनी करणी के अनुसार फल मिलेगा।

व्यक्ति की यह भावना होनी चाहिए कि जब अपने कर्मों के अनुसार फल भोगना है तो परिवार में रहते हुए भी जितना संभव हो सके, निर्लिप्त और अनासक्त रहने का प्रयास करूं। पदार्थों के प्रति हमारे मन में ज्यादा मोह न हो। उनका उपयोग करना होता है, उन्हें काम में लेना होता है, किन्तु उनमें अनासक्त रहना चाहिए। यह अमोह की साधना है, राग से मुक्त होने की साधना है। साधु का जीवन तो अमोह की साधना का होता है अथवा होना ही चाहिए। अब चूंकि उसने घर-परिवार छोड़ दिया, धंधा छोड़ दिया, धर्म और अध्यात्म के वातावरण में आ गया, इसलिए उसका जीवन तो साधना प्रधान होना ही चाहिए। परन्तु श्रावक भी एक साधक है, पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक है। वह भी अमोह की साधना और रागमुक्ति की साधना का विकास करे। आसक्ति से सघन कर्मों का बंध होता है और अनासक्तियुक्त

कार्य से कर्मों का बंध सघन नहीं होता।

सेठ सन्यासी के पास बैठा था। कुछ ज्ञान की चर्चा चल रही थी। इतने में सेठ का बड़ा बेटा आया और बोला--'पिताजी! एक वर्ष पहले जो नया मकान खरीदा गया था, उसमें आग लग गई है।' लड़का तो सूचना देकर चला गया और पिता की हालत खराब हो गई। चेहरे का रंग उड़ गया। अतिशय चिंता के कारण वह कुछ कहने-सुनने की स्थिति में नहीं रहा। साधु ने उसे समझाने और संभालने की चेष्टा की। हमें और हमारे साधु-साध्वियों को ऐसे प्रसंगों में दुःख के क्षणों में लोगों को संभालना चाहिए। हमारे उपदेश से लोगों का मन हल्का होता भी है। लेकिन वह सेठ तो गहरे आर्त्तध्यान में चला गया। उसके मुंह से बार-बार एक ही बात निकलती थी--'महाराज! मैं तो बर्बाद हो गया।'

इतने में सेठ का छोटा बेटा आया और बोला--'पिताजी! जिस मकान में आग लगी, उसे हमने अभी कुछ ही दिन पहले बेच दिया था। अब वह....' इतना सुनना था कि भूमि पर पड़ा सेठ एक झटके के साथ उठकर बैठ गया। निराशा, हताशा, शोक और दुःख के भाव गायब हो गए। उसके स्थान पर आश्वस्ति और प्रसन्नता के भाव आ गए।

थोड़ी देर बाद बड़ा बेटा पुनः आया और बोला--'पिताजी आप आए नहीं, आग तो फायरब्रिगेड वालों ने किसी तरह बुझा दी, लेकिन मकान पूरी तरह से जल गया।' सेठ ने बेफिक्री से कहा--'जल गया होगा, अब अपने से क्या मतलब? मकान जब बेच दिया तो उसकी चिंता खरीदने वाला करे, हम क्यों करें?'

सेठ के बेटे ने कहा--'पिताजी! मकान की बिक्री वाली बात मैंने ही फाइनल की थी, लेकिन अभी तो सिर्फ करार हुआ था, रजिस्ट्री होनी बाकी थी। जब तक सब कुछ स्टाम्प पेपर पर लिखित रूप में नहीं हो जाता और बिक्री के पैसे हाथ में नहीं आ जाते, मकान पर मालिकाना हक तो हमारा ही है। नुकसान जो हुआ, अपना ही तो हुआ है।' सेठ फिर गहरे अवसाद में चला गया।

राग है, मोह है तो आदमी बार-बार प्रसन्न होता है और बार-बार दुःखी होता है। धन्य हैं वे आत्माएं और वे संतजन, जो अपने जीवन में अमोह की साधना करते हैं, राग भाव से मुक्त होने और वीतरागता के अभ्यास का प्रयास करते हैं। जैन धर्म में वीतरागता को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। आदमी अपने जीवन का यह ध्येय बनाए कि उसे वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ना है। जैन धर्म के नमस्कार महामंत्र में भी वीतरागता केन्द्रीय तत्त्व है। हम नमस्कार महामंत्र का जप करें, साधना करें, अभ्यास करें, जिससे हमारे जीवन में वीतरागता पुष्ट हो। हम आत्मालोचन करें, अनुप्रेक्षा करें, अनुचिंतन करें कि हम कितने वीतराग भाव की ओर अग्रसर हो रहे हैं? कितना वीतराग भाव हम आत्मसात कर सकते हैं? वीतरागता बढ़ती है तो हमारी साधना पुष्ट होती है। वीतरागता पुष्ट न हो तो साधना की कोई खास निष्पत्ति नहीं आ सकती। साधु हो या श्रावक, सभी वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ें। हम समता की साधना करें, वीतरागता की साधना करें और अठारह पापों में जो दसवां पाप राग है, उसे कृश करने का प्रयास करें।

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

आत्मनियंत्रण हो विद्यार्थियों में

१६ सितम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज जीवनविज्ञान अकादमी जैन विश्वभारती, लाडनूं तथा जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में महाविद्यालय स्तरीय जीवनविज्ञान प्रशिक्षण शिविर समायोजित हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि नीरजकुमारजी ने गीत का संगान किया। जीवनविज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक श्री ओमप्रकाश सारस्वत एवं श्री रामप्रकाश सोनी ने अपने विचार व्यक्त किए। कालू कन्या महाविद्यालय की व्याख्याता श्रीमती निर्मला भास्कर ने जैन विश्वभारती

विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत किया। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। सादुलपुर प्रवास संपन्न कर गुरु सन्निधि में पहुंचनेवाली समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो व्यक्ति स्वच्छन्दता का निरोध कर अनुशासित हो जाता है, वह अपना विकास कर सकता है। जहां संयम और आत्मनियंत्रण नहीं होता, वहां व्यक्ति दुःखी बन सकता है। इसलिए जीवन में संयम और अनुशासन का विकास अपेक्षित है। महाविद्यालय के विद्यार्थी कुछ विकसित होते हैं। उनका अध्ययन परिपक्वता की ओर बढ़ रहा होता है। वे अपने जीवन पर ध्यान दें कि उनमें संयम की चेतना का विकास हो रहा है या नहीं? कालेज के जीवन में फिसलन की भी स्थिति हो सकती है। ऐसी स्थिति में आत्मनियंत्रण और संयम की अपेक्षा होती है। विद्यार्थी नशे की गिरफ्त में जाने से बचने का प्रयास करें। उनमें नैतिकता के प्रति निष्ठा जागे। उनमें यह आस्था हो कि परीक्षा में अंक भले ही कम आएं, किन्तु हम अनुचित और अवैध उपायों का सहारा नहीं लेंगे। विद्यार्थियों में मैत्री का विकास हो। उनमें यदि लौकिक विद्या के साथ सत्संस्कारों का विकास होता है तो उनका व्यक्तित्व परिपूर्ण बन सकता है तथा वे परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए हितकर सिद्ध हो सकते हैं।'

इस एकदिवसीय महाविद्यालय स्तरीय जीवनविज्ञान प्रशिक्षण शिविर में सात महाविद्यालयों की संभागिता रही। संभागियों को मध्याह्न में पुनः परमाराध्य आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। इस दौरान पूज्यवर ने उन्हें नशामुक्ति का संकल्प भी कराया। आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी तथा प्रशिक्षक श्री हनुमान शर्मा ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया। गत १५ सितम्बर को पूज्यवर की सन्निधि में तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के संचालकों/प्रतिनिधियों का सम्मेलन समायोजित हुआ।

आज मध्याह्न में रेलवे ट्रेनिंग सेंटर उदयपुर के वाइस प्रिंसिपल श्री सी.एल. सीतारा ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

साधना का सार है कषायमुक्ति

२० सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आर्हत वांङ्मय में आत्मशुद्धि के दो साधन बताए गए हैं--संवर और निर्जरा। आश्रव बंधन का कारण है और संवर मोक्ष का हेतु है। तपस्या के द्वारा होने वाली आंशिक आत्मोज्ज्वलता को निर्जरा कहा जाता है। तपस्या के द्वारा आत्मकलुषता को दूर किया जा सकता है। साधक कषाय मंदता का अभ्यास करे। उसका यह प्रयास हो कि मन, वचन और काया कषायमुक्त रहें। शुभयोग निर्जरा का साधन है, इसलिए साधक अधिकाधिक शुभयोगों में रहने का प्रयास करे। व्यक्ति आत्मालोचन करे कि मुझमें कषाय की मात्रा कितनी है? कषाय मंदता की साधना अपने आप में एक बड़ी तपस्या है। साधना का सार है--कषायमुक्ति। अकषाय की स्थिति में ही मोक्ष प्राप्ति संभव है।'

प्रवचन के पश्चात पूज्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का सरस शैली में वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

दुःख का मूल कषाय

२१ सितम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन में चार गतियों का वर्णन मिलता है--नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति। संसारी जीव इन्हीं चार गतियों में भ्रमण करता है। कर्मों से आबद्ध जीव संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं। कषाय के कारण कर्मबंध होता है। यह दुःख का मूल है। क्रोध, मान, माया और लोभ के कारण जन्म-मरण की परंपरा को सिंचन मिलता है। इस परंपरा से मुक्त होने के लिए संयम और कषायमंदता का अभ्यास आवश्यक है। क्योंकि प्रगाढ़ कर्मों के

बंधन के कारण आत्मा नरक और तिर्यंच गति में उत्पन्न होती है। जो राग-द्वेष से विमुक्ति की साधना करता है, वह धन्य हो जाता है। साधु और गृहस्थ--दोनों के लिए कषायमंदता की साधना अपेक्षित होती है। साधक अभ्यास के द्वारा अपने लक्ष्य की ओर गति कर सकता है।'

प्रवचन के उपरान्त पूज्य आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। बोरावड़ से समागत संघ की ओर से वहां के तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया।

सफल बनाएं जीवन

२२ सितम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्मोपासना के द्वारा व्यक्ति को अपना जीवन सफल और सार्थक बनाना चाहए। धर्म का श्रवण अध्यात्म का द्वार है। व्यक्ति चिंतन करे कि वह चौबीस घंटों में कितना समय धर्मश्रवण आदि में नियोजित करता है। धर्म को सुनने वाला व्यक्ति अपने जीवन में उसे आत्मसात् भी कर सकता है, इसलिए सुनने का महत्त्व है। सुनने से करणीय और अकरणीय का विवेक जाग सकता है। धर्मश्रवण के साथ उस पर मनन भी होना चाहिए। ज्ञान के साथ आचार का समन्वय अपेक्षित होता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'धर्म श्रवण में संलग्न व्यक्ति अनेक पापकारी प्रवृत्तियों से अनायास ही बच जाता है। सत्साहित्य के स्वाध्याय से ज्ञान का विकास हो सकता है। स्वाध्याय से जीवन की दिशा और दशा बदल सकती है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की ज्ञान चेतना विशिष्ट थी। उन्होंने साहित्य जगत को नए-नए आयाम दिए। सत्साहित्य के स्वाध्याय से निषेधात्मक भावों और मानसिक पापों से बचाव हो सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन के पश्चात् राजस्थानी भाषा में 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। संगरूर से समागत संघ की ओर से वहां की तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

त्रिदिवसीय केन्द्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षण शिविर के समापन पर सभी संभागियों को आचार्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। सिवांची-मालाणी के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा भीम से विज्ञ, विशारद व स्नातक प्रशिक्षकों ने भाग लिया। शिविर में श्री डालमचन्द नौलखा मुख्य प्रशिक्षक थे। मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी एवं मुनि पुलकितकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। शिविर की व्यवस्था में प्रवास व्यवस्था समिति व स्थानीय तेरापंथी सभा का योगदान रहा।

सेवा है शाश्वत धर्म

२३ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'हर व्यक्ति के जीवन में अनासक्ति की चेतना जागे। शास्त्रों में प्रतिपल धर्म करने की जो बात कही गई है, वह अनासक्त चेतना के जागरण से संभव हो सकती है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'मूल्य सेवा का' विषय पर अपना मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य में वैयावृत्त्य या सेवा की भावना को उजागर किया गया है। अनेकानेक लोगों ने स्वयं को सेवा हेतु समर्पित किया है। उत्तराध्ययन सूत्र में सेवा का उत्कृष्ट प्रतिफल तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन बताया है। मनुष्यों में तीर्थंकर से बड़ा कोई नहीं होता। वैयावृत्य करने वाला इतना पुण्योपार्जन कर लेता है कि दुनिया में उससे बड़ा कोई नहीं होता। सबसे बड़ा आदमी हो जाता है। सेवा से जीवन चलता है और सेवा से ही समाज चलता है। जीवों का परस्पर आलंबन व सहयोग से कार्य चलता है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'साधु व गृहस्थ सभी को यथासंभव परावलंबन से बचना चाहिए। जो

कार्य वह स्वयं कर सकता है, वह दूसरों से नहीं करवाना चाहिए। साधु संस्था के संदर्भ में देखते हैं कि वे एक-दूसरे की सेवा करते हैं। साधु-साध्वियां संयम-साधना व पवित्र सेवा के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाएं। सेवा वस्तुतः शाश्वत धर्म है। सेवार्थी के शरीर को अपने शरीर के समान ही मानें और उसे चित्तसमाधि पहुंचाने का प्रयास करें। अनशनपूर्वक समाधिमरण को संप्राप्त साध्वी वैराग्यश्रीजी की सेवा का लाभ साध्वियों ने उठाया। शासनश्री साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी का कोमा की स्थिति में लाडनूं स्थित साध्वी प्रमोदश्रीजी आदि साध्वियों को सेवा का अवसर मिला। मेरा यह मंतव्य है कि सेवा की समुचित व्यवस्था न हो तो संघीय व्यवस्था चलना कठिन हो जाए। सेवा का मूल्य है तो वह अमूल्य भी है, यह भी कहा जा सकता है।'

सेवा की अभिप्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'साधु संस्था सेवा को अधिमान दे। बीमार एवं अशक्त साधु-साध्वियों की सेवा अन्तर्मन से करें। यह उनका धर्म है। जिस समय सेवा करना आवश्यक है, उस समय सेवा को ही महत्त्व दें, अन्य कार्यों को गौण कर दें। मौके पर सेवा करने वालों को याद किया जाता है। सेवा करने हेतु साधु-साध्वियां हमेशा संकल्पित और तत्पर रहें।' प्रवचनोपरान्त पूज्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का सरस शैली में वाचन किया।

अभातेयुप के १७ सितम्बर को संपन्न राष्ट्रव्यापी ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय संयोजक श्री राजेश सुराणा व उनकी टीम यहां पहुंची। कार्यक्रम में उपस्थित श्री सुराणा ने इस संदर्भ में अपने विचार रखे। इस विराट उपक्रम की रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में। उदयपुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार फतावत ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। बालोतरा ज्ञानशाला के पांचवर्षीय मार्मिक सालेचा व अर्पित कटारिया ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी।

राजस्थान राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती लाडकुमारी जैन ने आज पूज्य आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आयोजन

२४ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के एक उपक्रम अणुव्रत लेखक मंच का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनि नीरजकुमारजी द्वारा अणुव्रत गीत के संगान के बाद अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने स्वागत भाषण किया। मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. नरेन्द्र शर्मा'कुसुम' ने कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। चंडीगढ़ से समागत डॉ. अमरसिंह बधान, अणुव्रत पाक्षिक के संपादक श्री महेन्द्र जैन, पूर्व संपादक व संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट के विशेष वक्तव्य हुए। आभारज्ञापन महामंत्री श्री सम्पत श्यामसुखा ने एवं कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत पाक्षिक की संपादक डॉ. उषा गोयल ने किया। 'भारतीय समाज' का नवीन अंक संपादक श्री आलोक खटेड़ ने तथा 'शाश्वत गीतिकाएं' डॉ. प्रेममोहन लखोटिया ने भेंट की।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'वक्ता वर्तमान को प्रभावित करता है, जबकि लेखक वर्तमान और भविष्य, दोनों को प्रभावित करता है। लेखक में यह क्षमता होती है कि वह शताब्दियों तक खुराक दे सकता है। लेखक अपनी प्रतिभा का उपयोग कर चरित्र की स्याही से लिखता है। ऐसा लेखन जीवन को सही राह देने में सक्षम होता है। भोगा हुआ सच लेखक की लेखनी से निःसृत होता है तो वह महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आजकल शाश्वत सत्य पर लिखने वाले लेखक स्वल्प हो गए हैं और बाजारू लेखक अधिक हो गए हैं। लेखक अणुव्रत के आदर्शों के अनुरूप चलें, क्योंकि अणुव्रत हर युग के लिए समीचीन और हर व्यक्ति के लिए उपयोगी है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में जीवन की नश्वरता का बोध कराते हुए कहा--'शरीरधारी मनुष्य, देवता, पशु-पक्षी सभी की मृत्यु अवश्यंभावी है। यह एक शाश्वत नियम है। दूसरी बात--वर्तमान में मृत्यु कब आएगी, निश्चित रूप से यह जान पाना बहुत कठिन है। आत्मा अमर और शरीर समर-नश्वर

है। जीवन का कोई भरोसा नहीं है कि कब कौन-सा श्वास अन्तिम बन जाए? एक पैर उठ गया, दूसरा उठ पाएगा, यह कहना कठिन है। इसलिए अपेक्षित है मानव अपने जीवन में पवित्र आचरण करता रहे।'

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन की चर्चा करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा--'अणुव्रत जीवन को पवित्र बनाने व बनाए रखने का सशक्त उपाय है। आचार्य तुलसी ने अपने आचार्य काल में जो महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित किए, उनमें एक है अणुव्रत आचारसंहिता की प्रस्तुति। उनकी यह शिक्षा रही कि व्यक्ति अच्छा इन्सान बने। वह अनैतिकता, असंयम एवं हिंसा से यथोचित रूप में उपरत रहे।' कषाय को हिंसा का प्रमुख कारण बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'भुखमरी भी आदमी से पाप करवा सकती है। पैसे व सेक्स के लिए भी आदमी हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है। हिंसा के सघन अंधकार में अणुव्रत के दीपक को जलाया जा सकता है।'

अणुव्रत लेखक मंच के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'लेखक के पास दिमागी शक्ति होती है। उस शक्ति से पाठक को प्रकाश मिल सकता है, दिशादर्शन प्राप्त हो सकता है। लेखक की लेखनी कभी भी अमौलिक व निराधार नहीं होनी चाहिए। वह अपनी बात सदैव साधार, अपेक्षित व टु दि पोइंट लिखता है तो उसका लेखन सटीक, स्पष्ट और समाज को मोड़ देने वाला बन सकता है। साहित्य प्राणवान हो। जिसमें प्राणवत्ता नहीं, वह साहित्य पाठक में प्राण संचरित करने में समर्थ नहीं होता। अणुव्रत लेखक मंच से संपृक्त लेखक कहां-कहां से आते हैं। लेखकों का जीवन अणुव्रत के आदर्शों से अनुप्राणित हो तो वे जन-जन में अणुव्रत की प्रतिमा स्थापित कर सकेंगे।'

अर्थार्जन में अप्रशस्त साधनों को प्रयुक्त न होने दें

२५ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अर्थ का अपना मूल्य है तो ईमानदारी का भी अपना मूल्य है। ईमान को छोड़ देने से विशुद्धता कैसे रहेगी? गलत काम करने से पाप कर्म का बंध होता है। इस अनुबंध से व्यक्ति को परिणाम भी भुगतना पड़ता है। व्यापारी अर्थार्जन हेतु व्यापार करता है। वह व्यापार के माध्यम से जनता की सेवा करता है। व्यापार में अप्रामाणिकता के कारण उसकी सेवा कलुषित हो जाती है। डॉक्टर चिकित्सा के द्वारा, शिक्षक शिक्षा-दान के द्वारा अपनी सेवा देता है। इसमें पवित्रता बनी रहनी चाहिए। न्यायाधीश की सेवा यह है कि वह न्याय देता है, अन्याय नहीं होने देता। वकील अपने पेशे से न्याय को प्रतिष्ठित करने में अपना योगदान देता है। गार्हस्थ्य में रह रहे विभिन्न क्षेत्रों से संबद्ध लोग आत्मावलोकन करें कि कहीं कोई अनैतिक कार्य तो उनके द्वारा नहीं हो रहा है? वे चिंतन करें कि कहीं मैं अपराध में तो लिप्त नहीं हो रहा हूं? अर्थार्जन में अप्रशस्त साधन को कभी भी प्रयुक्त न होने दें।'

मंत्री मुनिश्री का इस अवसर पर विशेष वक्तव्य हुआ। 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री चांदमल मेहर' पुस्तक के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री सुआलाल मुणोत ने पुस्तक पूज्य चरणों में भेंट की। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अनुग्रह करते हुए सरदारशहर की श्रीमती वरजीदेवी कुंडलिया एवं श्रीमती कमलादेवी गोठी को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में अणुव्रत लेखक सम्मेलन के समापन सत्र में श्री नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' एवं श्री अमरसिंह बधान ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर का संक्षिप्त, किन्तु प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने अपने विचार रखे। पहले दिन के विभिन्न सत्रों में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी की उपस्थिति में प्रो. प्रेममोहन लखोटिया, श्री सिद्धेश्वर (पटना), श्रीकृष्ण शर्मा (जयपुर), श्री विजयप्रकाश त्रिपाठी (कानपुर) प्रो. जमनालाल बाहेती (भीलवाड़ा), श्रीमती प्रभा जैन आदि ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। अणुव्रत पाक्षिक के संदर्भ में भी सार्थक परिचर्चा चली।

दूसरे दिन 'लेखन के प्रतिमान : संचार माध्यमों के संदर्भ में' विषयक सत्र में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा--'लेखन के प्रतिमानों के बारे में सोचने से पहले जीवन के प्रतिमानों को ढूंढ़कर उन्हें स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।' इस अवसर पर मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी का भी विशेष वक्तव्य हुआ। वरिष्ठ पत्रकार श्री धीरेन्द्र राहुल, लेखिका श्रीमती सविता लाखोटिया, श्री प्रमोद वैष्णव एवं श्री बंशीलाल पारस ने अपने सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत पाक्षिक के प्रबंध संपादक श्री प्रदीप संचेती ने किया। स्थानीय अणुव्रत समिति के जिला प्रभारी श्री ओम बांठिया एवं अध्यक्ष श्री पदमसिंह ने आभार ज्ञापित किया। इस द्विदिवसीय सम्मेलन में अट्ठावन लेखकों की संभागिता रही।

रावणा राजपूत समाज के अध्यक्ष श्री बाबूसिंह भाटी, संरक्षक श्री मोहनसिंह चौहान, महामंत्री श्री बाबूसिंह चौहान एवं समाज के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और रावणा राजपूत समाज के भवन में पधारने का भावभरा अनुरोध किया। आचार्यप्रवर ने वहां ३० सितम्बर को प्रातः आयोजित होने वाले कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की।

साधु-साध्वियों में तपस्याएं

चतुर्मास के दौरान गुरुकुलवास में तपस्या करने वाले साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--

१. मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल)	मासखमण
२. मुनि रजनीशकुमारजी	बारह की तपस्या
३. साध्वी तरुणयशाजी	पन्द्रह की तपस्या
४. साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी	दस की तपस्या
५. साध्वी चारित्रयशाजी	नौ की तपस्या
६. साध्वी उज्ज्वलरेखाजी	अठाई
७. साध्वी मलयश्रीजी	सात की तपस्या

दो माह एकान्तर

१. मुनि राजेन्द्रकुमारजी	४. साध्वी गुलाबकंवरजी (ढाई माह)
२. साध्वी धवलप्रभाजी	५. साध्वी संगीतप्रभाजी
३. साध्वी हेमरेखाजी	डेढ़ महीने पारणे में आयम्बिल, एक महीने फिर एकान्तर

एक माह एकान्तर

१. मुनि महेन्द्रकुमारजी	१२. साध्वी अमृतप्रभाजी
२. मुनि विजयकुमारजी	१३. साध्वी शुभ्रयशाजी
३. मुनि जयकुमारजी	१४. साध्वी श्वेतप्रभाजी
४. मुनि हिमांशुकुमारजी (डेढ़ माह)	१५. साध्वी शुभप्रभाजी
५. मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी	१६. साध्वी जयविभाजी
६. साध्वी कमलश्रीजी (डेढ़ माह)	१७. साध्वी दर्शनविभाजी
७. साध्वी तितिक्षाश्रीजी	१८. साध्वी गौरवप्रभाजी
८. साध्वी चित्रलेखाजी	१९. साध्वी उदितयशाजी
९. साध्वी विभाश्रीजी	२०. साध्वी प्रसन्नप्रभाजी
१०. साध्वी अनुशासनाश्रीजी	२१. साध्वी संकल्पप्रभाजी
११. साध्वी दर्शनप्रभाजी	२२. साध्वी विशालयशाजी

मासखमण तपस्याएं

- **बीदासर** में साध्वी विशदप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती प्रेमदेवी जैनसुख गोलछा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **तेजपुर** (असम) में समणी चिन्मयप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमती किरण सुरेन्द्रजी बरमेचा एवं श्रीमती सरोजदेवी हिम्मतमलजी कोठारी ने मासखमण तपस्या की है।
- **कांकरोली** में मुनि ताराचन्दजी के सान्निध्य में श्रीमती रंभादेवी चन्द्रप्रकाश चोरड़िया ने मासखमण की तपस्या की है।
- **विरार** में मुनि संजयकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती मनोहरदेवी मदनलालजी चपलोत ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **साक्री** (महाराष्ट्र) में साध्वी प्रबलयशाजी की सन्निधि में श्रीमती मीनलदेवी सुनील कांकरिया ने मासखमण एवं श्रीमती रूपालीदेवी प्रमोदजी गेलड़ा ने ३५ दिन की तपस्या की है।
- **नागपुर** में समणी निर्वाणप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती संतोषदेवी राजेन्द्रकुमार पटावरी ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **कांकरिया-अहमदाबाद** में मुनि प्रशान्तकुमारजी के सान्निध्य में श्री जतनलालजी सुराणा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **पाली** में साध्वी लब्धिश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती प्रमिलादेवी प्रसन्नकुमार सुन्देचा ने मासखमण तप किया है।
- **श्रीडूंगरगढ़** में साध्वी स्वर्णरेखाजी एवं साध्वी प्रज्ञाश्रीजी के सान्निध्य में श्री हंसराजजी भंसाली ने ४१ दिन की तपस्या की है।
- **सरदारशहर** में साध्वी मधुस्मिताजी के सान्निध्य में श्री विनोदकुमार सुमेरमलजी तातेड़ एवं श्रीमती कमलादेवी मिलापचन्द दूगड़ ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **बीकानेर** में साध्वी जयश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती चन्दूदेवी जेठमलजी बोथरा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **डोंबीवली** में समणी कमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्री सुरेन्द्रजी कन्हैयालाल बैद ने मासखमण तप किया है।
- **कालू** में साध्वी फूलकुमारीजी की सन्निधि में श्रीमती तारादेवी मदनलालजी लोढ़ा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **छापर** में मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के सान्निध्य में श्रीमती सपना राजेशजी दुधोड़िया ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **जोकीहाट** (असम) में श्रीमती जतनदेवी तोलाराम बोथरा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **रायसिंहनगर** में साध्वी कमलरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती संपतदेवी चांदमलजी सुराणा ने मासखमण तप किया है।
- **अमराईवाड़ी (अहमदाबाद)** में मुनि जयचन्दलालजी के सान्निध्य में श्रीमती मंजुलादेवी रतनलाल दक एवं श्री नवरतनमल धूलचन्द कोठारी ने मासखमण तपस्या की है।
- **सूरत** में मुनि सुरेशकुमारजी की सन्निधि में मासखमण तप करनेवालों के नाम इस प्रकार हैं--श्रीमती सुजाता राकेश मेहता, श्री इन्द्रमलजी राठौड़, श्रीमती कुसुमदेवी विमलकुमार बैद, श्रीमती मीनादेवी नवीनभाई शेठ, श्री मोहनलाल भंवरलाल पूनमिया, श्री ख्यालीलाल हगामीलाल कोठारी, श्री भंवरलाल

चतुरभुज चोपड़ा, श्रीमती आशादेवी मुकेशजी आच्छा, सुश्री मानसी (सुपुत्री-श्री प्रेभभाई मेहता)।

- **उधना** में मुनि भूपेन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती रमादेवी कुन्दनमल चोरड़िया, श्री निखिल मित्तल ने मासखमण एवं श्री भंवरलाल चोपड़ा ने छत्तीस दिन की तपस्या संपन्न की है।
- **कोलकाता** में साध्वी कनकश्रीजी (लाडनूं) की सन्निधि में श्री छतरसिंह गिड़िया, श्री जुगराज बैद, श्री मदनचन्द सुराणा, श्रीमती संतोषदेवी संतोष भरूंट (बेलडांगा), श्रीमती चन्दादेवी माणकचन्द नाहटा, श्रीमती कमलादेवी संपतमल डागा (उत्तर हवड़ा), श्रीमती शान्तिदेवी बजरंगलाल खटेड़, श्रीमती पुष्पा मांगीलाल बरमेचा ने मासखमण, श्री डालमचन्द भंसाली ने ४१ दिन तथा श्रीमती संपतदेवी नेमचन्द दूगड़ (दक्षिण हवड़ा) ने ३४ दिन की तपस्या की है।
- **विराटनगर** (नेपाल) में साध्वी त्रिशलाकुमारीजी की सन्निधि में श्रीमती इन्द्रादेवी विजयराज, श्रीमती सुषमादेवी सुभाषचन्द बादलिया, श्रीमती प्रेमलता कन्हैयालाल बाफना, श्रीमती चम्पादेवी डागा, श्रीमती राजकुमारी हंसराज लूणिया ने मासखमण एवं श्री कनकमलजी दूगड़ ने बत्तीस दिन की तपस्या की है।
- **हैदराबाद** में साध्वी कंचनप्रभाजी की सन्निधि में श्री रतनलाल पोकरणा एवं श्रीमती पुष्पादेवी राजेन्द्र भुतोड़िया के मासखमण तप संपन्न हुए हैं।
- **हासन** (कर्नाटक) में साध्वी कीर्तिलताजी की सन्निधि में श्रीमती दिव्या दिनेशकुमार सेठिया, श्रीमती प्रेमलता शांतिलाल गुलगुलिया, श्रीमती उषादेवी विमलकुमार कोठारी ने मासखमण तप एवं श्रीमती झमकूदेवी सज्जनराज डोसी ने ३६ दिन की तपस्या संपन्न की है।
- **बेल्लारी** (कर्नाटक) में साध्वी कुंथुश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती संगीतादेवी प्रवीण गोठी, श्रीमती नीतूदेवी महावीर छाजेड़ ने मासखमण तप किया है।
- **बोरावड़** में साध्वी तेजकुमारीजी की सन्निधि में श्री विवेक गेलड़ा, श्री कमल लूणिया एवं श्रीमती गौतमकंवर ऋषभचन्द मेहता ने मासखमण तप किया है।
- **अहमदाबाद** में साध्वी अशोकश्रीजी की सन्निधि में श्री ऋषभ विपिन शाह, श्रीमती इन्द्रादेवी पारसमल सालेचा एवं श्रीमती पुष्पादेवी चांदमल दक ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **कटक** में साध्वी कुन्दनरेखाजी की सन्निधि में श्री छगनलाल सिंघी, श्री उत्तमचन्द कोचर, श्रीमती रेणुदेवी प्रकाश बैद एवं श्रीमती सरोजदेवी माणकचन्द पुगलिया ने मासखमण की तपस्या की है।
- **चेन्नई** में साध्वी संगीतश्रीजी की सन्निधि में पांच मासखमण तप हुए हैं--श्री प्रकाश मूथा, श्री सुनीलकुमार खींवेसरा, श्रीमती चांदनी संचेती, श्रीमती सुनीता आंचलिया एवं श्रीमती सुशीला बोहरा।
- **पंचकुला** (हरियाणा) में साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी की सन्निधि में श्रीमती सरिता विमल चोपड़ा ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **जयपुर** (मिलाप भवन) में साध्वी संयमश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती कुसुमदेवी महावीर भंडारी एवं श्रीमती निर्मलादेवी लक्ष्मीपत जूनीवाल ने मासखमण तप किया है।
- **जयपुर** (श्यामनगर) में साध्वी अणिमाश्रीजी की सन्निधि में श्री विजयकुमार संचेती एवं श्री अविनाश नाहर ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **जयपुर** (अणुविभा) में साध्वी रामकुमारीजी (सर.) की सन्निधि में श्री सुरेश बरड़िया ने मासखमण तप किया है।

क्रमशः

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्री राजकरण दूगड़ (सुपुत्र-शासनसेवी श्री सुजानमलजी दूगड़) का बावन वर्ष

की अल्पायु में अचानक हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के संसारपक्षीय भतीजे एवं साध्वी सुमतिप्रभाजी तथा साध्वी चारित्रयशाजी के भाई थे। राजकरणजी बहुत सीधे, सरल, अल्पभाषी और कठोर परिश्रमी थे। प्रतिदिन सामायिक का उनका नियम था। उन्हें अनेक वर्षों से जमीकन्द और रात्रि भोजन का त्याग था। उनका जीवन संतुलित और संयमित था।

- राजगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्री पन्नालाल पारख का नब्बे वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। सरल, शान्त, उदार और भद्र पन्नालालजी के पांचों पुत्रों व एक पुत्री सहित पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। उन्होंने संघ की अनेक रूपों में सेवा की है। राजगढ़ स्थित उनके घर में साधु-साध्वियों का यदा-कदा प्रवास होता रहा है।
- चूरू निवासी कोलकाता प्रवासी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री डालमचन्दजी सुराणा का देहावसान हो गया। मुनि छत्रमलजी, मुनि नगराजजी, साध्वी रतनकंवरजी एवं साध्वी किस्तूरांजी के संसारपक्षीय कनिष्ठ भ्राता सुराणाजी हंसमुख स्वभाव के सहज, सरल व थोकड़ों के अच्छे जानकार, बारह व्रतधारी श्रावक थे। वे कई संस्थाओं से जुड़े हुए थे। उनकी धर्मपत्नी नारीरत्न श्रद्धा की प्रतिमूर्ति विवेकशील श्राविका श्रीमती तारा सुराणा महिला मंडल की दो बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुकी हैं। उनके दोनों सुपुत्र सुरेन्द्र, नरेन्द्र श्रद्धाशील कार्यकर्ता हैं। चूरू का सुराणा परिवार प्रतिष्ठित और संघनिष्ठ परिवार है।
- लाडनूं निवासी कोलकाता प्रवासी नारीरत्न श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती सूरजदेवी बैंगानी (धर्मपत्नी-शासनसेवी स्व. हनुमानमलजी बैंगानी) का निधन हो गया। लाडनूं का बैंगानी परिवार धार्मिक एवं सामाजिक दोनों दृष्टियों से प्रमुख परिवारों में एक है। हनुमानमलजी की संघ व समाज को बहुत सेवाएं प्राप्त हुई हैं। गंगाशहर के सुप्रसिद्ध चोपड़ा परिवार की सुपुत्री होने से सूरजदेवी को धार्मिक संस्कार विरासत में प्राप्त थे। वह एक श्रद्धाशील, समर्पित, जागरूक एवं सक्रिय श्राविका थीं। कोलकाता, लाडनूं व अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को उन्होंने दीर्घकाल तक अपनी सेवाएं दीं। उनका व्यक्तिगत जीवन संयम एवं सादगी का प्रतीक था। उनके सुपुत्र कमलजी अच्छे जागरूक श्रावक हैं।
- तुसरा (ओडिसा) निवासी अणुव्रतसेवी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री मगनलाल जैन का निधन हो गया। साध्वी विपुलयशाजी उनकी संसारपक्षीया भतीजी हैं। मगनलालजी संघ और संघपति के प्रति समर्पित, विनम्र, मृदुभाषी व धुन के धनी श्रावक कार्यकर्ता थे। अच्छे वक्ता और संगायक थे। अणुव्रत महासमिति के चार वर्ष तक महामंत्री, ओडिसा तेरापंथी सभा के बारह वर्ष तक अध्यक्ष, महासभा की कई प्रवृत्तियों के ओडिसा प्रभारी रहे। प्रवक्ता उपासक के रूप में उन्होंने तेरह पर्युषण यात्राएं कीं। महासभा द्वारा संचालित 'उपासक प्रवक्ता पुरस्कार' उनकी धर्मपत्नी स्व. सीतादेवी जैन की स्मृति में उनके परिवार द्वारा प्रायोजित है। उनका सुपुत्र विकास जिम्मेदार कार्यकर्ता है।
- चिताम्बा निवासी सूरत प्रवासी श्री बाबूलाल भटेवरा का देहान्त हो गया। वे सरल व साहसी व्यक्ति थे। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करते थे। उनकी प्रेरणा से परिवार में धर्म के प्रति अच्छी भावना है। सूरत के बराछा रोड उपनगर में निर्मित तेरापंथ भवन उनकी जागरूकता का साक्षी है। वे नियमित सामायिक करते थे और चतुर्मास में रात्रि भोजन का परिहार रखते थे।
- राजलदेसर निवासी भुवनेश्वर प्रवासी श्रीमती झमकूदेवी बिनायकिया का ८८ वर्ष की अवस्था में तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। प्रतिदिन पांच-छह सामायिक करने वाली श्राविका के अन्तिम समय तक सजगता बनी रही। उन्होंने आठ तक की लड़ी व सोलह आदि की कई तपस्याएं कीं। कहते हैं संथारा संपन्न होने के एक दिन पूर्व उन्होंने भावदीक्षा भुवनेश्वर समाज के समक्ष स्वीकार की।
- बलुन्दा निवासी व्यावर-चेन्नई प्रवासी श्री कनकमलजी सेठिया का ६४ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

हो गया। संघ व संघपति के प्रति समर्पित कनकमलजी नियमित सामायिक व आचार्यों की लंबे समय तक सेवा उपासना करते थे। उनका जीवन संयमित व सादगीपूर्ण था।

श्रेणी आरोहण का आदेश

२१ सितम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने ५ नवम्बर को जसोल में समायोज्य दीक्षा समारोह हेतु समणी अचलप्रज्ञाजी (समदड़ी) समणी लावण्यप्रज्ञाजी (जसोल) एवं समणी समताप्रज्ञाजी (जसोल) को श्रेणी आरोहण का आदेश प्रदान किया है। ज्ञातव्य है--आचार्यप्रवर इससे पूर्व इसी समारोह हेतु एक अन्य समणीजी को श्रेणी आरोहण, पांच मुमुक्षु भाइयों को मुनि दीक्षा, छह मुमुक्षु बहनों को साध्वी दीक्षा तथा चार मुमुक्षु बहनों को समण दीक्षा का आदेश प्रदान किया है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्रीमती लूणीदेवी कोठारी तातेड़ (धर्मपत्नी-स्व. श्री चन्दनमलजी तातेड़, जसोल-पाली) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू अशोक-संतोष, कैलाश-कला, सुपौत्र नितिन, अंकुर, सुपौत्री वैशाली कोठारी तातेड़, मदुरै-इरोड-सूरत-पाली-जसोल द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. बाबूलालजी पटवारी (चारभुजा-मुम्बई) की स्मृति में उनके पिताश्री हीरालालजी, भ्राता मनोहरलाल, सुपुत्र पंकज, विपुल, वैभव तथा सुपौत्र लक्ष्य पटावरी, द्वारा-प्रशान्त ज्वेलर्स, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री पांचीलालजी सेठिया (सरदारशहर) की पुण्यतिथि पर उनकी पुत्रवधू श्रीमती संतोषदेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू प्रदीप-स्नेहलता, मनोज-संगीता, कुलदीप-श्वेता, प्रपौत्र रवि, वर्द्धमान, प्रपौत्री पूजा, मुस्कान, ईशा व कनिष्का सेठिया, कोलकाता-कटिहार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री मनोहरलाल (सुपुत्र-स्व. भूरालालजी-सायरदेवी कोठारी, गजपुर-अहमदाबाद) के ऑल इंडिया पेपर ट्रेडर्स एसोसियेशन का अध्यक्ष बनने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र एवं पुत्रवधू भावेश-मधु, राहुल-मीना, सुपौत्र नील, दर्शिल एवं सुपौत्री हेत्वी कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. अंकित (राजाजी का करेड़ा-चेन्नई) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में श्री कन्हैयालाल, लादूलाल सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, अशोककुमार मेड़तवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती चेतना धारीवाल (पुत्रवधू-श्री कालूरामजी, धर्मपत्नी-राकेशकुमार धारीवाल, छोटीखाटू-कोलकाता) की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में धारीवाल परिवार द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : २९-९-२०१२

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**